5 Jan 2012

कानपुर | बृहस्पतिवार | 5 जनवरी 2012

अमर उजाला

कंपिल का सबसे प्राचीन स्मारक मिला

- हाथी की मूर्ति, फर्श, लकड़ी की तश्तरी भी निकली
- राख से भुने हुए गेहूं के दाने मिले, जांच को भेजा

अमर उजाला ब्यूरो

कंपिल। कंपिल में चल रहे उत्खनन में फर्श निकले है। दल ने फर्श पर मिले राख व मिट्टी के नमूने लिये है। जिन्हें मुंबई प्रयोगशाला में कार्बन डेटिंग के लिए भेजा जायेगा। दल का अनुमान है कि यह फर्श मध्यकालीन युग के हो सकते है और उस दौरान यहां आबादी रही होगी। इसके अलावा एक हाथी की मूर्ति व लकड़ी की तश्तरीनुमा वस्तुएं भी निकली है। साथ ही पुरातत्व दल ने खुदाई स्थल के पास कंपिल के सबसे प्राचीन स्मारक का भी पता लगाया है।

लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास एवं भारतीय पुरातत्व विभाग के रिसर्च टीम द्वारा कराये जा रहे उत्खनन में दूसरे चरण के १७ वें दिन नन्हें वाल्मीकि के खेत में १.७० मीटर की गहराई पर फर्श मिला। जिस पर जगह-जगह काली राख व पीली मिट्टी के बड़े-बड़े धब्बे थे। दल के सदस्य डा. विनय कुमार शर्मा ने फर्श की ब्रुश से अच्छी तरह सफाई करायी। नमूने लेते समय काली राख में भुने हुए गेहूं के दाने भी मिले। डा. शर्मा के अनुसार फर्श मध्यकालीन युग का हो सकता है। लेकिन इसका सही पता मुंबई प्रयोगशाला में कार्बन डेटिंग की रिपोर्ट से ही पता चल सकेगा। उन्होंने संभावना जताते हुए बताया कि उस समय यहां निश्चित रूप से आबादी रही होगी।

खुदाई में मिला हाथी और लकड़ी की तश्तरी।

उन्होंने बताया कि सुबह खुदाई में एक हाथी की मूर्ति व लकड़ी के दरवाजों पर सजावट के लिए लगायी जाने वाली डिस्कें भी मिली है। जिस पर खूबसूरत फूल पत्ती बनी हुई है। दूसरे स्थान पर चल रही खुदाई में दल को बुधवार को कोई खास वस्तु तो नहीं मिली लेकिन उसमें से निकलने वाले पोल्ट्री के टुकड़ों को साफ करके संग्रहित किया जा रहा है। इसके अलावा दल के लोगों ने खुदाई स्थल के आसपास के वैज्ञानिक सर्वेक्षण में एक स्मारक का भी पता लगाया है। यह लगभग २००० वर्ष पुराने कुषाण काल का प्रतीत होता है। दल के अनुसार पुरातत्व की दृष्टि से यह कंपिल का जमीन के ऊपर दिखने वाला सबसे पुराना स्मारक है।

डा. विनय कुमार शर्मा ने बताया कि इस स्मारक में जो ईंटें लगी है वह आकार की दृष्टि से ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कुषाण काल की है। उन्होंने बताया कि यह कंपिल की अमूल्य धरोहर है और इसको संरक्षित किये जाने की आवश्यकता है।

उन्होंने बताया कि खुदाई में कई स्थानों पर पिट मिले है। जिनसे पता चलता है कि यहां लोगों ने पुरानी संपदा के लालच में गहराई तक खुदाई की। बाद में उस जगह को मिट्टी से भर दिया गया। दल का अनुमान है कि यहां के उत्खनन में महाभारतकाल व इससे पूर्व की भी सभ्यता प्राप्त हो सकती है। यह भूमि कालांतर में सभ्यताओं की पर्त दर पर्त समाती चली जाती है। खुदाई कार्य को देखने के लिए दिनभर लोगों की भीड़ जुटी रही। एलआईयू के अधिकारियों ने भी खुदाई की तथ्यपरक जानकारी जुटाई। पूर्व में इटली के भूतत्वविद् व पुरातत्वविदों का दल अपने वैज्ञानिक सर्वेक्षण में कंपिल में महाभारतकालीन काम्पिल्य नगर, पांचाल प्रदेश के मंदिर व बुद्ध स्तूपों के मिलने की संभावना व्यक्त कर चुके है।